कठिन परिश्रम से मिलती है सफलता,
प्रतिभा किस्मत की मोहताज नहीं होती।।

विकास कोलिवाल
निजी सहायक
जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष
आयोग, राजसमन्द।

निजी सहायक भर्ती परीक्षा से पहले लिखी कविता।

पेंसिल मेरी सखी

बहुत पहले शुरू किया था सफर,
अब पूरा होने जा रहा है,
चुना था मैंने जो लक्ष्य,
वो अब करीब आ रहा है।।

छोड़ा था जिस पेंसिल को बचपन में,
आज वही साथ निभा रही है,
अपनी पैनी नोक से,
मेरा मुकद्दर लिखने जा रही है।।

डायरी के पन्नों पर लिखता हूं,
रोज अपना संघर्ष अपनी जुबानी,
बहुत मेहनत से पूरी की है मैंने,
इस बेदर्द 'स्टेनो' की कहानी।।

कभी टूटी पेंसिल की नोक,
कभी लिखते हुए शब्द छूटे,
अब तो तभी बात रहे,
जब परीक्षा में सारे रिकॉर्ड टूटे।।

--vikas--

दो घूंट खुशी के पीने दो

जो बची है जिंदगी थोड़ी सी,
उसे शौक से मुझको जीने दो,
मैं मौजी हूं मतवाला,
दो घूंट खुशी के पीने दो।।

मैं मुसाफिर कुछ दिन का,
वापस लौट जाऊंगा,
जब तक हूं लेकिन दुनियां में,
सुकून से मुझको जीने दो।।

कभी सुख पाए, कभी दुख पाये,
सब–कुछ हम सहते आये,
जो जख्म मिले दिल पर गहरे,
तबियत से उनको सिलने दो।।

सीने में धधकती ज्वाला,
कह रही है मुझसे,
तय करले अपनी मंजिल,
और छीन ले किस्मत से,
कर ले मकसद पूरा,
मौका ना हाथ से निकलने दो।।

--vikas--

सुमति

स्वच्छ ह्रदय सुमति लिये,
मैं अपने पथ पर चलता हूं,
ऐसा नहीं है कि,
दुनियां की भव्य चीजों पर,
मैं ना मचलता हूं,
हर शौक रखता हूं फिर भी,
सब के हित को साधे चलता हूं।।

बेशक चाहता हूं कामयाबी मगर,
दुनियां की शोहरत देखकर,
ना कोई मुझे खलता है,
और ना ही मैं किसी से जलता हूं।।

मन में लिए भावनाएं अपार,
मैं मुख में शीतल वाणी लिए चलता हूं,
माना नहीं हूं खास मैं,
पर जहां भी जाता हूं,
सबका दुलार लिये चलता हूं।।

किस्मत को कभी नहीं कोसता,
मैं अपनी मुट्ठी में,
अपनी किस्मत साथ लिये चलता हूं,
नहीं हो सकती कोई भी हानि मुझे,
मन में पापा के संस्कार,
और मां का असीम प्यार लिये चलता हूं।।

--vikas--

चलो उठो अपने सपनों को पूरा करते हैं

चलो उठो अपने सपनों को पूरा करते हैं,
अपने मन में जरा जोश भरते हैं,
देखा है उम्र भर जो एक सपना,
चलो आओ उसकी तरफ उड़ान भरते हैं।।

हर दिल में पलते है ख्वाब अलग–अलग,
कोई उड़ना चाहता है पायलेट बनकर आसमान में,
किसी के मन में डॉक्टर बनने की इच्छा है,
कोई बनना चाहता है फौजी देश सेवा को,
बनना चाहता है कवि मुझ जैसा भी कोई,
इन्हीं इच्छाओं को लेकर चलो,
अपनी–अपनी राहों पर ईमानदारी से चलते हैं,
चलो उठो अपने सपनों को पूरा करते हैं।।

हार गए एक बार तो क्या हुआ,
चलो फिर से कोशिश करते हैं,
सामने आने वाली चुनौतियों को परास्त करते हैं,
अपने मां–बाप का सिर गर्व से ऊंचा करते हैं,
अपनी जिंदगी में थोड़ा संघर्ष करते हैं,
सफलता की तरफ एक कदम रखते हैं,
चलो उठो अपने सपनों को पूरा करते हैं,
अपने मन में जरा जोश भरते हैं।

--vikas--

चन्दा में जो देखा अक्श तेरा,
तेरी याद होले से आई है,
मन हुआ है विचलित,
आंख भी भर आई है।।

मेरे ह्रदय की हर एक धड़कन,
दे रही मेरे प्यार की दुहाई है,
है तुझसे प्यार इतना कि,
मेरी हर सांस में बस तू समायी है।।

रहमत है रब की जो,
मुझे आबाद करने तू आई है,
किस्मत पर भी नाज है,
कि अपनी जोड़ी मिलायी है,
देखा हजारों दफा तुझे,
फिर भी तुझे देखने को,
ये आंखें तरस आई है।।

है ह्रदय से शुक्रिया तेरा,
की तूने भी प्रीत क्या खूब निभायी है,
पहले तो मिलायी आंखें,
और अब सीधा दिल में उतर आई है।।

--vikas--

विकास कोलिवाल
निजी सहायक
जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष
आयोग, राजसमन्द (राज.)
मोबाईल नंबर – 9166671234